National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-02-2019; Accepted: 15-03-2019
www.nationaljournals.com
Volume 4; Issue 2; April 2019; Page No. 46-47

मथुरा की ऐतिहासिक एवं लोकरंजक मूर्तियाँ

डॉ० सन्तोष कुमार शुक्ल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश के नगरों में यमुना नदी के तट पर स्थित मथुरा का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महतव अद्यतन सुरक्षित है। मथुरा भौगोलिक दृष्टि से $27^{0}31'$ उत्तरी अक्षांश एवं $77^{0}14'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। धर्मनिष्ट लोग इस पुरास्थल को श्रीकृष्ण से जोड़ते हुये अत्यन्त पवित्र मानते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य में इस नगरी को मधुपुरी, मधुपुरा एवं मथुरा आदि नामों से वर्णित किया गया है। ग्रीक लेखकों ने इसे 'मथोरो' और 'मदूरा' (देवताओं का नगर), जैन लोग इसे 'सूर्यपुर' और चीनी यात्री फाह्यान ने इसे 'मा–ताऊ–लो' जबकि हुएनसांग 'मो–तू–लो' नाम से उल्लिखित किया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से मथुरा शूरसेन महाजनपद की राजधानी के रूप में स्थापित थी। यहाँ से सर्वप्रथम 1836 ई0 में एक मूर्ति प्राप्त हुई जिसका सम्बन्ध सिलेनश से जोड़ा गया। इसने कला प्रेमियों एवं पुरातत्त्व विदों को अपनी ओर आकर्षित किया। 1954–55 ई0 में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया के एम0 वैंकटरमैय्या और श्री वल्लभ सरन द्वारा मथुरा के 'कटरा टीला' का उत्खनन करवाया गया। फलस्वरूप यहाँ से 600ई0 पू0 से 600ई0 के मध्य के ऐतिहासिक और लोकरंजक मूर्तियाँ, मृण्मूर्तियाँ, सिक्के और लेख प्राप्त हुये।

मूर्तिकला का उद्भव आदिम मानव समाज की स्वाभाविक कलाभिरूचि को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से हुआ था। आरम्भिक मूर्तियाँ गीली मिट्टी से गढ़कर बनाई गयी थीं, लेकिन इनके शीघ्र विनष्ट होने के भय ने पकाने की विधि को जन्म दिया। फलस्वरूप मूर्तियो को सदा के लिए जीवन्त करने के उद्देश्य से धातुओं का प्रयोग किया गया। मूर्तिकला शैली के विकास में मथुरा के शिल्पि अग्रणी और तक्षण कला के धनी रहे हैं। ये मूर्तियाँ हमारे पूर्व पुरूषों की आकृति–प्रकृति, वेशभूषा, रहन–सहन, आचार–व्यवहार और आमोद–प्रमोद की स्थायी प्रतिनिधि हैं। जहाँ तक पाषाण मूर्तियों का सम्बन्ध है, वे मौर्यकाल के पूर्व की नहीं मिलती हैं।

मथुरा राज्य के कुषाण कालीन कलाकारों ने सामान्य मूर्तियों के साथ ही साथ ऐतिहासिक मूर्तियों का निर्माण किया था। भारतीय मूर्तिकला को मथुरा की यह विशिष्ट देन है। ऐसी मूर्तियों में कुषाण नरेश विम तक्षम, कनिष्क और शक क्षत्रप चष्टन की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भास के प्रतिमानाटक में 'देवकुल' का वर्णन है, जिसका निर्माण राजाओं की मूर्तियों को रखने के लिए किया गया था। जिसका पुरातात्त्विक प्रमाण मथुरा के 'मांट गोकर्णेश्वर' टीले से प्राप्त हुआ है। एक अभिलेख कनिष्क के आरम्भिक काल का है, जिससे ज्ञात होता है कि मांट में 'देवकुल' उद्यान, वापी और तड़ाग का निर्माण कराया गया था। दूसरा अभिलेख हुविष्क के शासन काल का है जिसमें देवकुल के जीर्णोद्धार कराये जाने का उल्लेख है।

प्रथम ऐतिहासिक मूर्ति मस्तक विहीन विम तक्षम की है, जो 6 फुट 10 इंच ऊँची, 3 फुट 3 इंच चौकोर चौड़ी आधार युक्त सिंहासन पर बैठी हुई है। मूर्ति के पादपीठ पर अभिलेख की पंक्तियाँ उत्कीर्ण हैं। अभिलेख की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं –

1. महाराजोराजातिराजोदेवपुत्रो
2. कुषाणपुत्रोषहिविमतक्षमस्य
3. बकनपतिनहुम ..... देवकुलकारिता
4. आरामो पुष्करिणिउद्पानं च स (भा) दार कोठको.....।

अर्थात विम तक्षम के शासन काल में वक्पतिहुम नामक किसी विशिष्ट व्यक्ति ने उद्यान, वापी और तड़ाग साहित एक देवकुल का निर्माण कराया था। इसमें कुषाण शासक की उपाधि 'महाराजराजातिराज देवपुत्र कुषाण पुत्र शहि वेम तक्षम' मिलती है।

कुषाण शासक कनिष्क की एक विशालकाय मूर्ति जो 1.67 मीटर है, मथुरा संग्रहालय में संरक्षित है। मूर्ति वस्त्रों से अलंकृत है और मूर्ति के निचले भाग में बाह्मी में '(प्रथम) कनिष्क' शब्द उत्कीर्ण है।

मथुरा संग्रहालय में विम तक्षम और कनिष्क के साथ ही उज्जैनी नरेश शक क्षत्रप 'चष्टन' की मूर्ति भी प्रदर्शित है। खण्डित मूर्ति वस्त्रों से सुसज्जित है। मूर्ति लेख में राजा का नाम 'शस्तन (चष्टन)' बाह्मी में उत्कीर्ण है।

परवर्ती कुषाण राजा हुविष्क ने मथुरा में एक बौद्ध विहार निर्मित करवाया था, जिसे 'हुविष्क विहार' कहते हैं। इसने मांट के छतिग्रस्त देवकुल का भी जीर्णोद्धार करवाया था। इस शासक की मूर्ति के विषय में सम्भावना की जाती है कि गोकर्णेश्वर महादेव की जो मूर्ति पूजित है, उसकी बनावट कुषाण राजपुरूषों के सदृश है, वह हुविष्क की बैठी मूर्ति हो। इसके अन्य प्रमाण गोकर्ण टीला से प्राप्त कुषाण राजपुरूष की खण्डित मूर्ति है। इसी प्रकार मथुरा संग्रहालय में अनेक ऐसे खण्डित मस्तक प्रदर्शित हैं, जिनके बनावट राजपुरूषों की भाँति है।

मथुरा के मूर्तिकारों ने शासकों के अतिरिक्त राजमहिषी की मूर्तियाँ भी निर्मित की थी। जिसमें राजवुल की राजमहिषी कम्बोजिका की मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मूर्ति का निर्माण नीले सलेटी रंग के पत्थर से गान्धार शैली में किया गया है। बहुत कुछ संभव है कि इस मूर्ति को गन्धार से लाकर मथुरा में प्रतिष्ठित किया गया हो।

ऐतिहासिक मूर्तियों के अतिरिक्त मथुरा से शुंग–कुषाण कालीन ऐसी मनमोहक मूर्तियाँ मिलती हैं, जिन्हें लोकरंजक कहा गया है। मथुरा के प्राचीन आवास गृहों एवं उपासनालयों को आकर्षक तथा लोकरंजक बनाने के लिए उनके द्वारों और बाहरी दीवारों को अलकंरणीय मूर्तियों से सजाया जाता था। ऐसी मूर्तियों में नट एवं नटी की मूर्ति, मुकुट और राजदण्ड धारण किये हुये राजपुरूष की मूर्तियाँ, भाव–भंगिमा से युक्त चवँरधारी पुरूष की मूर्ति, स्त्रियों के अलंकरणीय दृश्य, शालभंजिका और मनमोहक व हास्य परक दृश्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। शालभंजिका में उत्कीर्णन आनन्दपूर्ण लोक जीवन की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत कर रही हैं।

उक्त विवरणों से स्पष्ट है कि कला को किसी धर्म या सीमा में नहीं बाँधा जा सकता है। इसके विषयवस्तु का क्षेत्र असीमित है। शोध पत्र के माध्यम से ज्ञात होता है कि अभिलेख के प्रमाण मूर्तिकला में भी विद्यमान हैं, जिसके माध्यम से इतिहास के पक्ष प्रकाशित होते हैं। मथुरा से प्राप्त ऐतिहासिक और लोकरंजक मूर्तियों का वर्णन न होने की दशा में कला के पक्ष अधूरे रह जाते हैं।

संदर्भ

1. मीतल, प्रभुदयाल : ब्रज की कलाओं का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1977
2. पाण्डेय, प्रो. जय नारायण : भारतीय कला, प्रथम भाग, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2008
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 2010
4. शास्त्री, हीरानन्द : एक्सकेवेशन ऍट संकिस्सा, जर्नल, उत्तर प्रदेश हिस्टोरिकल सोसायटी, लखनऊ, 1927
5. इण्डियन ऑकियोलाजी ए रिव्यू, नई दिल्ली, 1954.55
6. अग्रवाल, पृथ्वीकुमार : प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007.
7. श्रीवास्तव, बृजभूषण : प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2007
8. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र : भारतीय कला के विविध स्वरूप, पंचशली प्रकाशन, जयपुर, 1997
9. राजकीय संग्रहालय लखनऊ : संग्रहालय संख्या, जे0 1
10. राजकीयय संग्रहालय मथुरा : सग्रहालय संख्या, 12.212, 213, 215, जे0 1, 2, 7, 6, 61, एल0 2, ई0 2 एवं अन्य।